UPHIN/2016/67435 | ISSN–2456–0413

पीयर रिव्यूड हिन्दी तिमाही पत्रिका

पतझर

जनवरी – जून 2025 | मूल्य ₹ 100/-

अंतरिक्ष

पीयर रिव्यूड हिन्दी तिमाही पत्रिका

पतहर

वर्ष 10 अंक 1+2(संयुक्तांक)
जनवरी - जून 2025
कवर सहित पृष्ठ 84 मूल्य ₹100

प्रबन्ध सम्पादक
चक्रपाणि ओझा
9919294782
सम्पादक
विभूति नारायण ओझा
सहायक सम्पादक
डॉ. कमलेश कुमार यादव
+91 94223 86011

सम्पादक मण्डल

- डॉ. उन्मेष कुमार सिन्हा
- डॉ. विजय आनंद मिश्र

Email-hindipatahar@gmail.com

Mob. : 9450740268

http://patahar.blogspot.com/?m=1
www.notnul.com

दिल्ली सम्पर्क
स्वदेश सिन्हा
103 B, पाकेट ए- 1,
मयूर विहार फेज़ - 3, दिल्ली -110096

आवरण	रेखाचित्र
अन्तरिक्ष	आस्था

+91 98054 02242

पतहर, स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक विभूति नारायण ओझा द्वारा ज्योति ऑफसेट प्रेस सलेमपुर देवरिया से मुद्रित एवं कार्यालय ग्राम बहादुरपुर पोस्ट बड़हरा (खुखुन्दू) जिला देवरिया (उ.प्र.) से प्रकाशित।

सम्पादक- विभूति नारायण ओझा

प्रकाशित सामग्री से सम्पादक/ प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवादास्पद मामले देवरिया न्यायालय के अधीन होगा।

UPHIN/2016/67435

ISSN-2456-0413

पीयर रिव्यूड टीम

- **प्रो. चितरंजन मिश्र,**
  पूर्व प्रति कुलपति, हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा।
- **प्रो. मुरली मनोहर पाठक,**
  कुलपति , श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
- **प्रो. रामदरश राय,**
  कृतकार्य आचार्य, हिंदी विभाग एवं निदेशक पत्रकारिता संस्थान, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
- **डॉ विक्रम मिश्र,**
  सेवानिवृत्त उपाचार्य, हिंदी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
- **प्रो. अरविंद त्रिपाठी,**
  कृतकार्य आचार्य, हिंदी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
- **प्रो. चन्द्रेश्वर,**
  कृत आचार्य, एम.एल.के.पी.जी. कॉलेज, बलरामपुर
- **प्रो. अंजुमन आरा,**
  अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, रेवेंशा विश्वविद्यालय, कटक, उड़ीसा।
- **प्रो. अजय कुमार शुक्ला,**
  अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर।
- **डॉ. सचिन गपाट,**
  सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय मुंबई।
- **डॉ. मधुसूदन सिंह,**
  सहायक आचार्य, दिग्विजय नाथ एलटी प्रशिक्षण महाविद्यालय, गोरखपुर।
- **डॉ. बसुंधरा उपाध्याय,**
  सहायक आचार्य, हिंदी, राजकीय महाविद्यालय, पिथौरागढ़, उत्तराखंड।
- **डॉ. लक्ष्मी मिश्रा,**
  सहयुक्त आचार्य, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली।
- **डॉ. अजीत प्रियदर्शी,**
  सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, डीएवी पीजी कॉलेज लखनऊ।
- **डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल,**
  सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, खड़गपुर कॉलेज पश्चिम बंगाल।
- **डॉ संदीप कुमार सिंह**
  सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बगहा।
- **डॉ बिपिन कुमार यादव,**
  सहायक आचार्य, जेएलएन पीजी कालेज, महराजगंज।

खाता विवरण – पतहर, खाता सं. : 98742200010701
IFSC : CNRB0019874, केनरा बैंक, खुखुन्दू, देवरिया

गूगल पे : 9450740268

सदस्यता शुल्क विवरण पृष्ठ 20 पर देखें

हिन्दी पत्रकारिता के 200 साल का समय कोई कम नहीं होता। 'उदंत मार्तण्ड' से जब इसकी नींव रखी गई थी तब इतना विकास, तकनीक व संसाधन नहीं थे। हिन्दी पत्रकारिता ने अपनी इस लंबी यात्रा में अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। कई चुनौतियों का सामना किया है। आज के बदलते परिवेश में समय और बाजार को देखते हुए हिन्दी पत्रकारिता के स्वरूप में भी बदलाव आया है।

हिन्दी पत्रकारिता का आशय केवल हिन्दी अखबार निकालना नहीं होता बल्कि साहित्य, समाज और संस्कृति में भी समय के अनुरूप परिवर्तन लाना होता है। 200 साल पहले शुरु हुई यह मुहिम हजारों लाखों नहीं बल्कि करोड़ो भारतीयों के अंदर प्रवाहमान है। अंग्रेजी हुकूमत से संघर्ष करते हुए हिन्दी पत्रकारिता ने स्वदेश के लिए लड़ाई लड़ी और स्वतंत्रता प्राप्ति में अपना महती योगदान दिया। हमारे पूर्वज साहित्यकारों ने एक रास्ता दिखाया था जिस पर चलते हुए आज हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं ने एक बड़ा घर बना रखा है। आज अलग-अलग पत्रों के माध्यम से करोड़ो लोगों के बीच हिन्दी पहुंच रही है। इसने परिवर्तन लाने का काम किया, समाज को गति दी। सामाजिक बदलाव, सांस्कृतिक व ऐतिहासिक पुनरुत्थान का कार्य भी हिन्दी पत्रकारिता ने बखूबी किया।

हिन्दी पत्रकारिता ने लोगों को जागरूक तथा राजनीतिक, सामाजिक रूप से प्रेरित व शिक्षित करने का कार्य किया। उन्नीसवीं सदी का समय हिन्दी पत्र पत्रिकाओं के विकास का रहा है। देश-प्रेम की भावना से निकलने वाले हिन्दी पत्रों ने आम जनमानस को सामाजिक व राजनीतिक रूप से सुदृढ करने का काम किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से हिन्दी पत्र - पत्रिकाओं की संख्या में वृद्धि हुई और अधिकाधिक लोगों तक पहुंचने में सफल हुई। हजारों की संख्या में निकलने वाले हिन्दी पत्र केवल समाचार का ही प्रेषण नहीं कर रहे बल्कि पत्रों के माध्यम से हिन्दी भाषा के विकास का भी काम कर रहे हैं। यदि भाषा पर संकट आयेगा तो पत्रों पर भी संकट आयेगा ऐसे में यह आवश्यक है कि हिन्दी को विकसित करने के लिए हिन्दी भाषा का विस्तार निरन्तर होता रहे, जिससे भाषा सवरेगी और भाषा की लड़ाई लड़ने वाले नायको के संघर्षों को भी मजबूत करेगी। भाषा हमारी धरोहर है, धरोहर का संरक्षण हमारा दायित्व है। इसी के बदौलत हिन्दी पत्र पत्रिकाएं अपनी भूमिका समाज में निभा रही हैं। यह सुखद है कि प्रवासी देशों से भी हिन्दी पत्र पत्रिकायें आ रही हैं, लेकिन भारत के ही कई राज्य ऐसे है जहां हिंदी पत्रों के प्रति लोगों का रवैया उदासीन है। इस पर हमें सोचना होगा।

आज प्रतिस्पर्धा का दौर है। हिन्दी पत्रकारिता दीर्घ और लघु खेमे में बंट चुकी है। दीर्घ कारखाने लघु खेमें को दबाने में लगे हुए हैं। लघु और साहित्यिक पत्र आज भी अपने पूर्वजों की राह पर निकल रहे हैं लेकिन बढ़ती महंगाई और बदलते वातावरण ने लघु पत्रों पर संकट का काम किया है। कोई भी संस्थान आर्थिक रूप से सबल होने पर ही गति पकड़ सकता है। संसाधन के अभाव में विकास असंभव है। लघु पत्र-पत्रिकायें आज दम तोड़ रही हैं। वह निकलना चाहती है, समाज में हस्तक्षेप चाहती है लेकिन संसाधन अभाव के कारण वह बहुत कुछ नहीं कर पा रही, बल्कि थक-हार कर बंद हो जा रही हैं।

लघु पत्र समाज का आईना होता हैं। हिन्दी पत्रकारिता की इस लम्बी यात्रा को पूरा करने में इन लघु पत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज ये संकट में हैं। सरकारों द्वारा लघु पत्रों के संकट को लेकर ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। लघु पत्र बचेंगे तभी हिन्दी पत्रकारिता बचेगी और हिन्दी भी। सरकारों को चाहिए कि अलग से इन लघु पत्रों के लिए बजट का प्रावधान करें, छपने के लिए सरकारी प्रेस की व्यवस्था हो जिससे इन लघु पत्रों को प्रोत्साहन मिल सके तथा ये आज की हिन्दी पत्रकारिता के विकास में सहयोगी बने रह सके। 'पतहर' भी इन्हीं लघु पत्रिकाओं में एक है जो एक दशक से आपके बीच है और जन-बल से प्रकाशित हो रही है। सरकार के एक लघु प्रयास से 'पतहर' सहित उन हजारों पत्रों को राहत मिलेगी जो हिन्दी पत्रकारिता में अपना योगदान देना चाहते हैं।

'पतहर' के पूर्व अंको की भांति यह अंक भी संपूर्णता को लिए हुये है। पत्रिका पीयर रिव्यूड टीम द्वारा समीक्षित है। शैक्षिक रूप से समृद्धि हेतु विविध विषयों पर शोध पत्र प्रकाशित है, वहीं वरिष्ठ आलोचक (डॉ.) अरविन्द त्रिपाठी का आलेख साहित्यकार कुँवर नारायण को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। जाहिद खान का आलेख 'काकोरी शहीदों' की याद दिलाता है। साहित्यकार इन्द्र कुमार दीक्षित ने संत कबीर से परिचय कराया है। कौशल किशोर ने 'फिलिस्तीनी कविताएं- घर लौटने का सपना' पुस्तक की बेहतरीन समीक्षा की है। रंजना जायसवाल और अब्दुल गफ्फार की कहानी भी हमें सोचने पर मजबूर करती है। साथ ही प्रकाशित सामग्री-कविताएँ, व्यंग्य, लघु कथायें, साहित्यिक समाचार आदि भी पठनीय है।

इस अंक में हम अपने मार्गदर्शक, पथप्रदर्शक स्मृति शेष श्री विश्वनाथ ओझा (बाबा), श्रीमती प्रभावती देवी (दादी), सामाजिक कार्यकर्ता श्री विश्वंभर ओझा (चाचा) को एक साथ चौथी पुण्य तिथि पर स्मरण करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। साथ ही, अपने प्रिय रचनाकार कवि ध्रुवदेव मिश्र पाषाण (7 जनवरी 2025) एवं भोजपुरी के सशक्त हस्ताक्षर श्री रविन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी भाई', गोरखपुर (14 फरवरी 2025) तथा 'पतहर' परिवार के सबसे बुजुर्ग पारिवारिक सदस्य आचार्य पं. चन्द्रभान ओझा (2 मई 2025) के निधन पर विनम्र श्रद्धांजलि।

उम्मीद है यह अंक आपको पसंद आयेगा, आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी!

- **विभूति नारायण ओझा,** सम्पादक